5

गतसमनी

मत्ती 26:36-46; मरकुस 14:32-42; लूका 22:39-46; यूहन्ना 18:1

''तब यीशु ... गतसमनी नामक एक स्थान में आया'' (मत्ती 26:36)।

क्रूस की ओर जाने से पहले यीशु उस बलिदान के बारे में, जो उसने हमारे लिए देना था, प्रार्थना करने यरूशलेम के निकट गतसमनी नामक स्थान में गया। ''गतसमनी'' का अर्थ ''कोल्हू'' है। यरूशलेम से नाले के पार, जैतून पहाड़ पर यह बाग, यरूशलेम में रहते समय यीशु का ''प्रार्थना का स्थान'' (यूहन्ना 18:1, 2) था। वहां पर उसके होने की कहानी हृदयविदारक, अमूल्य, हार्दिक और कीमती है!

प्रार्थना का समय! यह रात बहुत लम्बी होने वाली थी, शुक्रवार के कष्ट का दिन भी बहुत लम्बा होना था। पतरस, याकूब और यूहन्ना को बाग के अन्दर, जबकि आठ प्रेरितों को वह बाग के बाहर छोड़ गया। इन तीनों को ''जागते रहो और प्रार्थना करो'' कहकर वह एकांत में चला गया (मत्ती 26:41; मरकुस 14:38)।

यीशु को पूरा पता था कि उसकी ''घड़ी'' आ पहुंची थी। इस समय को उसने ''कटोरा'' नाम दिया था (देखें मत्ती 26:39; मरकुस 14:36; लूका 22:42)। यह ''कटोरा'' क्या था? पूरे अनन्तकाल का युद्ध परमेश्वर और शैतान के बीच लड़ा जा रहा था। जीतने वाले का सब कुछ हो जाना था। मनुष्यजाति दांव पर लगी थी। यीशु ने शैतान, पाप, मृत्यु और नरक पर विजय पाने के लिए यह लड़ाई की! क्रूस पर उसने पुकारा, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?'' (मत्ती 27:46; मरकुस 15:34)। (1) उसे वह अर्थात पाप बनना था, जिससे परमेश्वर को घृणा है। (2) परमेश्वर का अनादि क्रोध उसके ऊपर उण्डेल दिया गया। (3) अनन्तकाल में केवल एक बार परमेश्वर पुत्र और पिता अलग होने थे। भयानक से भी भयानक! तौ भी मनुष्यजाति को बचाने की खातिर यीशु इस प्रबन्ध से भागा नहीं। अपनी मनुष्यता में वह कभी अक्खड़ नहीं था।

यीशु ने पहले ही अपने स्पष्ट पकड़वाए जाने की भविष्यवाणी कर दी थी। वह कितना निराश, आहत और ठुकराया हुआ लग रहा होगा! यहूदा ने उसे पकड़वाना था, जबकि पतरस ने उसका इनकार करना था। बारह प्रेरितों में से एक (यूहन्ना) ही क्रूस के पास होना था। इस्राएल ने जो परमेश्वर का चुना हुआ था, एक आम अपराधी (बरअब्बा) के पक्ष में उसे ठुकराना था।

मसीह की सबसे बड़ी सेवकाई प्रार्थना थी। यदि यीशु को प्रार्थना की आवश्यकता थी तो हमें

कितनी आवश्यकता है? उसने अपने साथ जागते रहने के लिए पतरस, याकूब और यूहन्ना को बुलाया, पर उन्हें नींद आ गई। वह घुटनों पर आकर मुंह के बल गिर गया। प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के सामने वह ज़ोर-ज़ोर से दुहाई देने लगा।

प्रार्थना यह गारण्टी नहीं है कि परमेश्वर हमारी हर इच्छा पूरी कर देगा। हमारी प्रार्थनाएं परमेश्वर की इच्छा पर निर्भर करती हैं। यीशु ने परमेश्वर को याद दिलाया कि वह असम्भव को सम्भव करने वाला परमेश्वर है!

सनातन निर्णय केवल प्रार्थना में ही लिए जा सकते हैं। किसी भी बात का हल बिना प्रार्थना के नहीं हो सकता। परमेश्वर द्वारा मांगे गए बलिदान के लिए यीशु को अपने मन पर काबू पाने के लिए प्रार्थना में लड़ना पड़ा था। जो प्रार्थना उसने उस समय की थी, वह अब तक की सबसे कठिन प्रार्थना है। मसीह के जीवन में यह ''परम पवित्र'' थी। उसकी अन्तिम शिक्षाएं इन प्रार्थनाओं के द्वारा दी गई थीं।

परमेश्वर ने यीशु की प्रार्थना का तुरन्त उत्तर दिया। एक स्वर्गदूत उसे सामर्थ देने आया (लूका 22:43)। एक स्वर्गदूत? *एक ही?* खाली कब्र पर परमेश्वर ने मरियम मगदलीनी और स्त्रियों के पास दो स्वर्गदूत भेजे थे (लूका 24:1-10; यूहन्ना 20:11, 12)। यीशु स्वर्गदूतों की बारह पलटनें बुला सकता था (मत्ती 26:53), पर उसे केवल *एक* ही मिला? मानवीय ज़िम्मेदारी की जगह अलौकिक आश्चर्यकर्म नहीं हो सकता था। यीशु से बेहतर और कौन जानता था कि ''... आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है'' (मत्ती 26:41; मरकुस 14:38)। केवल मनुष्यता में ही पापी मनुष्य के रूप में यीशु ने वह काम किया, जो कोई मनुष्य नहीं कर सका था, ''उसने अपनी देह में रहने के दिनों में ऊंचे शब्द से पुकार पुकारकर, और आंसू बहा बहाकर उससे जो उस को मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएं और विनती की और भक्ति के कारण उस की सुनी गई'' (इब्रानियों 5:7)।

क्रूस में भी गतसमनी की चिन्ता नहीं थी। पवित्र शास्त्र में यीशु ने परमेश्वर को केवल एक बार ''अब्बा'' (''डैडी'' से मिलता-जुलता आरामी शब्द) बाग में ही कहा था (मरकुस 14:36)। गतसमनी में यीशु छिपा नहीं, भागा नहीं और न उसने लड़ाई की ... उसने प्रार्थना की।

निर्णय लेने का समय! आलोचक यीशु में साहस की कमी का सुझाव देते हैं और उसे कायर तक कहते हैं। यह उस सब के विपरीत होगा, जो यीशु वास्तव में है! यीशु कायर नहीं था, वह मरने से, कष्ट से या क्रूस से डरता नहीं था। वह परमेश्वर से क्रूस को हटाने के लिए नहीं कह रहा था। क्रूस तो परमेश्वर की सनातन मंशा थी। परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र होने के रूप में वह हमारे पापों के लिए अन्तिम बलिदान देने को तैयार था, पर मनुष्य के रूप में वह उसका कोई और विकल्प ढूंढ़ना चाहता था। यह क्रूस के भेद का एक भाग है।

परमेश्वर की इच्छा को मान लेने के लिए यीशु की लड़ाई गुलगुता में पहुंचने से पहले गतसमनी में जीत ली गई थी।[1] बाग में परमेश्वर ने नहीं और यीशु ने हां कहा था। यीशु ने पाप को दिया जाने वाला ईश्वरीय न्याय और दण्ड मान लिया। क्रूस पर ''पूरा हुआ है!'' कहा तो क्रूस पर गया था, पर परमेश्वर की योजना को मानने का उसका निर्णय गतसमनी में लिया गया था। यीशु ने अपना प्राण बाग में और अपनी देह क्रूस पर दे दी।

एथलेटिक्स खेलों में तैयारी, निर्णय लेने तथा समर्पण से ही जीत प्राप्त की जा सकती है। यीशु

ने गतसमनी में लड़ाई जीत ली। *क्रूस पर जाने से पहले ही बड़ा निर्णय ले लें। जो कुछ करना है, उसका निर्णय लेने के लिए क्रूस पर चढ़ने की प्रतीक्षा न करें।*

कष्ट का समय! गतसमनी में कलवरी से अधिक कष्ट होगा। जितना कष्ट यीशु ने वहां सहा कभी किसी और ने इतना कष्ट नहीं सहा। पवित्र शास्त्र क्रूस पर उसके कष्ट से गतसमनी में होने वाले कष्ट को अधिक बताता है।

अत्यधिक पीड़ा में, ''उसका पसीना मानो लोहू की बड़ी-बड़ी बून्दों की नाईं भूमि पर गिर रहा था'' (लूका 22:44)। वह मृत्यु के कष्ट में था। उसका पसीना लहू की बूंदें बन *गया*। ऐसी अनोखी घटना है (जिसे हरमेटाइड्रोसिस या हीमोहाइड्रोसिस कहा जाता है)। उसने इस प्रकार एक बार नहीं, तीन बार प्रार्थना की! उसने प्रार्थना की, ''जो तुझे पसन्द हो तो यह कटोरा मुझ से हटा दे।'' उसके आलोचक ठीक थे: ''इसने औरों को बचाया, और अपने आपको नहीं बचा सका!'' (मत्ती 27:42; मरकुस 15:31; देखें लूका 23:35)। परमेश्वर ने यीशु की प्रार्थना का जवाब दिया! उसने यीशु को नहीं, पर हमें बचा लिया! यीशु अपने आप को नहीं बचा सका, पर फिर भी वह हमारा उद्धारकर्त्ता बन गया। *क्रूस के अलावा और मार्ग नहीं था!*

परमेश्वर का ठुकराया गया यह पुत्र मसीही दीनता का सेंटरपीस (उत्कृष्ट नमूना) है। क्रूस पर सहे यीशु के शारीरिक कष्ट को कम न जानें। यह बहुत भयानक था। पर बाइबल सिर्फ इतना ही कहती है कि उसने कष्ट सहा। क्रूस पर ''यीशु का पसीना, लहू'' नहीं बना। यह गतसमनी में ही बना था। परमेश्वर ने उसको सांत्वना देने के लिए स्वर्गदूत को बाग में ही भेजा (लूका 22:43)। क्रूस पर कोई स्वर्गदूत नहीं भेजा गया था।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!

टिप्पणी

[1]गुलगता (देखें यूहन्ना 19:17) को ''कलवरी'' (लूका 23:33; KJV) भी कहा जाता है, जो ''खोपड़ी'' (हिन्दी बाइबल में खोपड़ी ही है-अनुवादित) के अर्थ वाले लातीनी शब्द (*calvaria*) से लिया गया है।